July 28, 2019

फलागमन काल का पहला रविवार

लूकस 14:7–14

ख्रीस्त में मेरे प्यारे मसीही बहनों तथा भाइयों! आज माता कलीसिया फलागमन काल के पहले रविवार में प्रवेश करती है। इस काल का प्रारंभ प्रभु येसु के बारह शिष्यों के त्यौहार से होता है जिसे हम आज मना रहे हैं। इस काल को हम सीरियक भाषा में "कैथा" काल भी कहते हैं जिसका अर्थ है "ग्रीष्मकाल"। इसे हम "कटनी का काल" भी कहते हैं। यह काल हमें प्रेरितों द्वारा किये गये मिशनरी कार्यों के फलस्वरुप कलीसिया के विकास का स्मरण भी दिलाता है। यदि हमें कलीसिया के विकास और वृद्धि के बारे में जानना है तो प्रत्येक ख्रीस्तीय को उसके साक्ष्य भरे जीवन को नाप कर देखना होगा।

आज का सुसमाचार हमें शिष्यों के मनोभाव से अवगत कराता है। प्रभु येसु हमेशा अपने शिष्यों को संसार के अनुकूल न होने की शिक्षा दिया करते थे और बारंबार उन्हें एहसास दिलाते थे कि कैसे उन्हें संसार से अलग जीना सीखना है। एक आम इंसान की भाँति शिष्यों की हमेशा से यही चाह रही है कि वे भी अन्य लोगों की तरह, या समाज में प्रतिष्ठित लोगों की तरह जीवन यापन करें। लेकिन प्रभु येसु कदापि यह नहीं चाहते थे कि उनके चेले संसार का अनुकरण करें।

संत मत्ती के सुसमाचार अध्याय 20 वाक्य 20 से 28 हम पढ़ते हैं कि जब ज़ेबेदी के पुत्रों की माता अपने पुत्रों के साथ ईसा के पास आकर उनसे दण्डवत् कर निवेदन करती है कि उनके बेटों को येसु के राज्य में एक को दायें और एक को बायें बैठने देने का अधिकार मिले। लेकिन येसु उनसे कहते हैं कि तुम में ऐसी बात नहीं होगी। जो तुम लोगों में बड़ा होना चाहता है, वह तुम्हारा सेवक बने। प्रभु येसु आज के सुसमाचार में एक विवाह भोज के दृश्य को अपने शिष्यों के सामने रखते हैं। वे और उनके शिष्य भोज में आम मेहमानों की तरह निमंत्रित हैं। और वहाँ एक साधारण सा वाक्या प्रभु येसु देखते हैं। वाक्या यह है कि जो लोग उस विवाह भोज में निमंत्रित हैं वे सभी इसी कोशिश में लगे हुये हैं कि उन्हें विवाह भोज में मुख्य–मुख्य स्थान मिले।

मानव सदैव इसी खोज में लगा रहता है कि वह इस सांसारिक जीवन में लोगों के सामने अपने आप को बड़ा साबित कर सके। समाज में एक ऐसे तबके में स्वयं को रख सके जिसमें सब उसकी वाह–वाही कर सकें या उसकी प्रशंसा कर सकें। प्रभु येसु जिस विवाह भोज की घटना हमें बताते हैं उस से हम अच्छी

तरह वाकिब हैं। शायद यह हमारी दास्ताँ को बयाँ करता है। यदि हम इस विवाह भोज की तुलना आजकल के विवाह भोज से करें तो उसमें काफी समानता है। आज भी जब हम किसी विवाह के कार्यक्रम में जाते हैं तो हमारी कोशिश भी यही रहती है कि हम उस कार्यक्रम में मुख्य स्थान पर बैठें जिससे अन्य लोग यह समझें कि हम उस परिवार के खास व्यक्ति हैं। हमारी शादियाँ इतनी आलीशान हो गयीं है कि हम समाज के प्रतिष्ठित वर्ग या किसी नेता, अधिकारी या किसी बड़ी हस्ती को हम हर संभव निमंत्रण देने का प्रयास करते हैं। तथा यही चाहते हैं कि आने वाले मेहमान सुंदर वस्त्र पहन कर आयें। जब हम इन आलीशान विवाहों में जाते हैं तो उपहार स्वरुप हम भी अच्छी चीजों को देते हैं यह सोचकर कि हमारे निज परिवार में होने वाले विवाह कार्यक्रमों में भी हमें ठीक उतना मिले जितना हमने फलाँ विवाह में दिया था।

परन्तु प्रभु आज हमसे कहते हैं "जो अपने को बड़ा मानता है, वह छोटा बनाया जायेगा और जो अपने को छोटा बनाया जायेगा और जो अपने को छोटा मानता है, वह बड़ा बनाया जायेगा।" कहने का अर्थ है हमें इस संसार के ऐश आराम के पीछे नहीं भागना है वरन् हमें उस आत्मिक जीवन के लिए हमें दौड़ करना है जो हमारा वास्तविक घर है। जहाँ एक न एक दिन हम सभी को जाना है। हमें इस संसार के लिए नहीं बल्कि उस जीवन के लिये अपने आप को तैयार करना है। यही एक सच्चे ख्रीस्तीय का लक्ष्य होना चाहिए। क्योंकि यह संसार क्षणभंगुर है ।

संत लूकस के सुसमाचार अध्याय 16 वाक्य 19 से लेकर 31 में प्रभु येसु मरणोपरांत हमारे जीवन की दशा का बखान धनी व्यक्ति एवं लाज़रूस के दृष्टांत से करते हैं जिसमें इस जीवन और मरणोपरांत उस जीवन की दशा कैसी होगी उसकी झलक प्रभु हमें दिखाते हैं। प्रिय बहनों और भाइयों सत्य तो यही है कि हमारी चाहे कितनी भी अभिलाषाएँ या इच्छायें हो कि हम इस संसार में कुछ बन कर ही जीयें हमें यह नहीं भूलना है कि हम सब को यह संसार छोड़ कर जाना है । इसलिये हमारा प्रयास यही हो कि हम इस दुनिया के लिए नहीं बल्कि उस दुनिया के लिये जीने का प्रयास करें। अपने आप को इस लायक बनायें कि जब हम उस ईश्वर का सामना करें तो हमें लज्जित न होना पड़े। आइये हम अपने जीवन के महत्व को समझें व उसकी वास्तविकता को जानने की कोशिश करें। क्योंकि हमारा वास्ततिक घर यह नहीं वरन् इसके परे है। हम ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि वह हमें जीवन के सही मर्म को समझने की शक्ति दे तथा अपने वचनों के अनुसार जीने का सामर्थ्य प्रदान करे। ईश्वर हम सभी को आशिष दे। आमेन।

Rev. Fr. Saul Toppo

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019